आपातकाल में सृजन फुलवारी

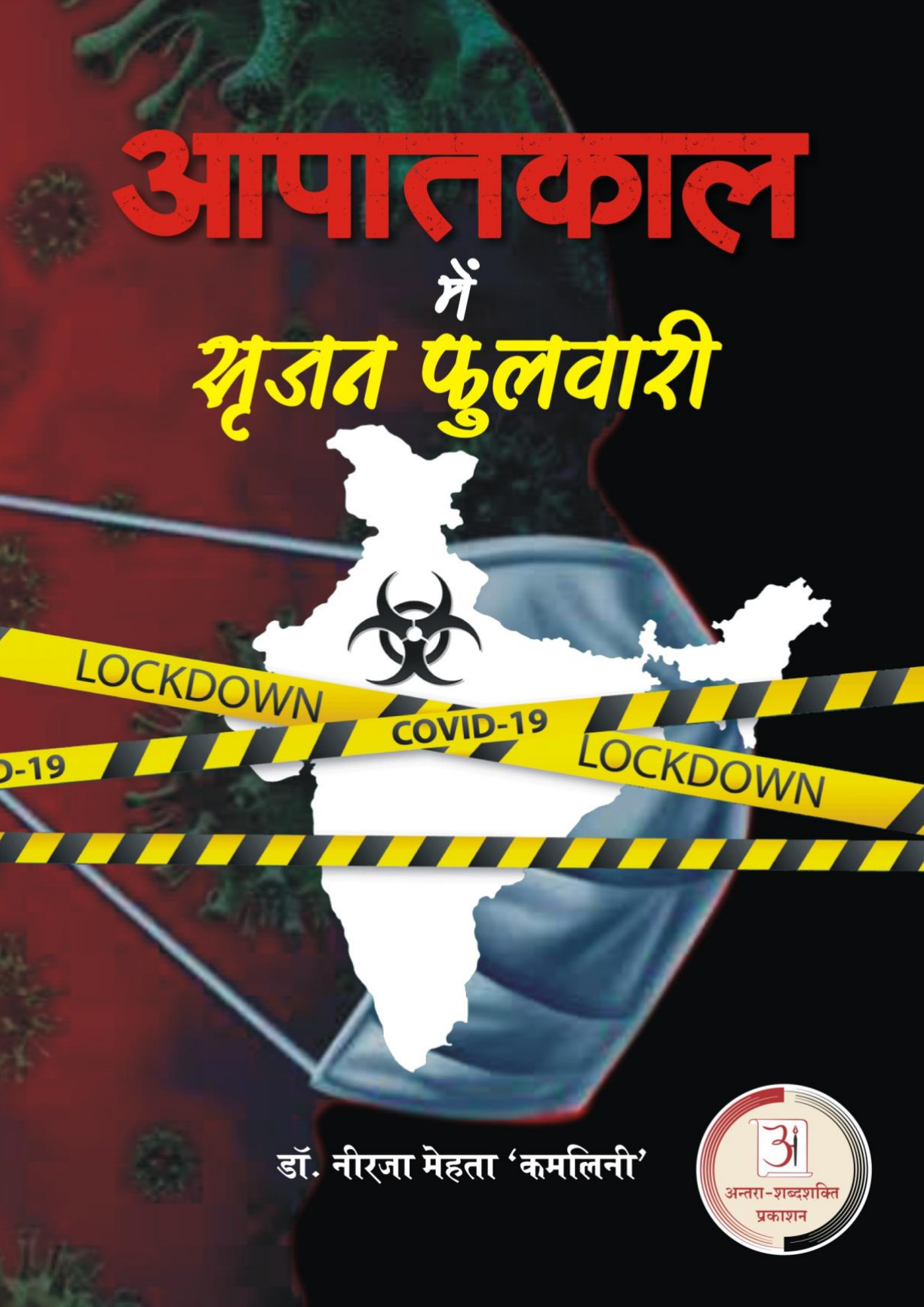

डॉ. नीरजा मेहता 'कमलिनी'

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

डॉ नीरजा मेहता 'कमलिनी'

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-143-5

संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी

मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159

मोबाईल- 9424765259

ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com

वेबसाईट- www.antrashabdshakti

प्रथम संस्करण- 2020, डॉ नीरजा मेहता 'कमलिनी'

मूल्य- 50.00 रूपये

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY NIRAJA MEHTA KAMLINI

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	ख़ुद से मुलाक़ात	6
2.	ज़िन्दगी, तूने रोज़ नया इक पाठ सिखाया	7
3.	मोक्ष का द्वार	8
4.	हाँ, मैं रंग भरना चाहती हूँ	9
5.	प्रेम का ज़ायका	10
6.	तेरे साथ की चाह अभी बाक़ी है	11
7.	कभी कहा था तुमने	12
8.	कल्पना का आधार	13
9.	सिलवटें	14
10.	तन्हाइयों का सफ़र	15
11.	आज थामा है तुमने हाथ मेरा	16
12.	मेरा भारत	17
13.	कुछ कर्म ऐसे कर जायेंगे	18
14.	कहीं खुरदुरा तो कहीं मखमली सा	19
15.	मैं हूँ साठ के पार	20

ख़ुद से मुलाक़ात

मैं डरती हूँ, हाँ, मुझे भय है,
मृत्यु का नहीं, जीवन का
समीपता का नहीं, दूरी का
भीड़ का नहीं, एकांत का,
कहीं ये एकांत आदत न बन जाये,
कहीं ये दूरी निकटता न भूल जाये,
कहीं ये जीवन मृत्यु को खेल न समझने लगे,
कहीं ये मंथन जीवन का कटु सत्य न बन जाये।

हमें लड़ना होगा, हमें समझना होगा
इस दूरी से निकटता रखनी होगी
इस एकांत में भीड़ खोजनी होगी,
बढ़ानी होंगी ख़ुद से ख़ुद की मुलाक़ातें,
पहचानना होगा जीवन को
जानना होगा सत्य मृत्यु का,
"हम" सुरक्षित करने हेतु,
"मैं" को अहमियत देनी होगी।

मैं भयभीत हूँ पर हारी नहीं हूँ
मैं छुपी हूँ पर खोयी नहीं हूँ,
थमती श्वासों में जीवन तलाश रही हूँ,
रुदन में हँसते चेहरे तलाश रही हूँ,
निर्जीव शरीर में आत्मा तलाश रही हूँ,
मैं यहीं-कहीं हूँ स्वयं में डूबी
अनंत से अंतस तक
खुद से मुलाक़ात कर रही हूँ।

ज़िन्दगी, तूने रोज़ नया इक पाठ सिखाया

ऐ ज़िंदगी! जीवन के अध्याय में
तूने रोज़ एक नया पन्ना जोड़ा,
जीवन का असली रूप दिखा
बिगड़ते हालात में धीरज सिखाया
मुश्क़िल में चट्टान सा ठहराव सिखाया
ज़िंदगी, तूने रोज़ नया इक पाठ सिखाया।

ऐ ज़िन्दगी! ग़म में हिम्मत, खुशी में संयम,
बदलते सच, सामने आते झूठ
नक़ाब ओढ़ते चेहरे, नेत्रों की भाषा
मीठी बातों में लिपटा छल
जीवन के हर रंग का रूप दिखाया
ज़िंदगी, तूने रोज़ नया इक पाठ सिखाया।

ऐ ज़िंदगी! सपनों में खोना, यथार्थ में जीना
जीत में संभलना, हार में मुस्कुराना,
काँटों पर चलना, गुलाबों सा महकना,
रिश्तों की अहमियत, अपनों का प्यार,
क़दम-क़दम पर तूने आइना दिखाया,
ज़िंदगी, तूने रोज़ नया इक पाठ सिखाया।

ऐ ज़िंदगी! धन की ताकत,
वक़्त की कीमत, व्यक्ति की पहचान,
उम्मीद न छोड़ना आत्मविश्वास में जीना,
अँधेरों में उजालों की किरण सा चमकना सिखाया
ज़िंदगी, तूने रोज़ नया इक पाठ सिखाया।
हाँ, तूने रोज़ नया इक पाठ सिखाया।।

मोक्ष का द्वार

आज जी उठी हूँ मैं,
आज सत्य से पलायन नहीं
किया है मैंने सामना,
स्वयं के अंतस में
स्वयं की, की है तलाश।

अपने अंदर के पाप को निकालना
प्रकाश पुंज में अपने झूठ को होम करना,
अनेक वृत्तियों भावों का आत्मविश्लेषण करना,
सत्य के समक्ष आत्मसमर्पण करना
इतना सरल न था।

आज किया है मैंने स्वयं का कायाकल्प,
निकाल फेंका है अपने अंदर का गरल,
किया है खुद के अहम का समर्पण
और पहुँच गयी हूँ मोक्ष के द्वार।

आज दृष्टिगोचर है वो प्रकाश
जिसको पाने के लिए
बरसों तपस्या की है,
आज स्वयं को रिक्त नहीं
बोझमुक्त महसूस कर रही हूँ
आज धरती से ऊपर उठ खुद को
साधारण मानव से बढ़कर
देवत्व रूप में देख रही हूँ।

हाँ, मैं रंग भरना चाहती हूँ

सर पर नीला आसमान
पांव के नीचे पीली धरती
चारों ओर हरी प्रकृति
मन में गुलाबी सपने
आँखों में ज़िन्दगी के कई रंग
पर फिर भी ज़िन्दगी
श्वेत-श्याम सी।

मिलाना चाहती हूँ
इन रंगों को,
सहेजना चाहती हूँ
इन स्वप्नों को,
बदलना चाहती हूँ
नीरसता, नीरवता को,
इन नीले-पीले रंगों में
अपना अक्स देखना चाहती हूँ।

ज़िन्दगी के इन रंगों को
घोलना चाहती हूँ,
इन रंगों में
नई उड़ान भरना चाहती हूँ,
एकाकार कर
अपनी श्वेत-श्याम ज़िन्दगी
रंगीन करना चाहती हूँ
हाँ, मैं रंग भरना चाहती हूँ।

प्रेम का ज़ायका

हम तुम
हों चाय के साथ
लेकर हाथों में हाथ
खो जायें फिर उन्हीं यादों में
जी लें एक बार फिर वही पल...
घोलना चाहती हूँ
चाय में शक्कर सी
तुम्हारी मीठी बातें...
चखना चाहती हूँ
चाय पत्ती सा
तुम्हारे प्रेम का कड़क स्वाद...
महसूस करना चाहती हूँ
अदरक के सौंधेपन सा
अपनी पलकों पर
तुम्हारे बोसे को...
चाहती हूँ फिर वही
इलायची सी
महकती शाम हो...
जहाँ हो सिर्फ हम
और हो प्रेम का ज़ायका
कुछ मीठा सा!
कुछ कड़क सा!
कुछ महकता सा!

कभी कहा था तुमने

कभी कहा था तुमने
लिख डालोगे मुझ पर एक नज़्म नूरानी
जानती हूँ नहीं भूले होगे तुम
और मुझे भी याद है वो बात पुरानी.....
कहा था तुमने छेड़ दोगे जब तान
बज उठेंगे मेरे दिल के तार
तो आओ, मैं बैठी हूँ कर तुम्हारा इंतज़ार.....
आज की शाम मैं तन्हा हूँ
मेरी आँखों में जला मुहब्बत की शमा
मुझे अपनी वो नज़्म दे जाओ.....
कुछ अल्फाज़ जोड़ लूँगी मैं
कुछ एहसास भर दूँगी मैं,
गुनगुना लूँगी, बरसा दूँगी आबशार
बुझा लूँगी तिश्नगी,
कब तक भेजोगे ये मुखबिर अपने
सबूत हैं ये हिचकियाँ
बहुत याद करते हो तुम.....
कभी कहा था तुमने
वादा किया था तुमने,
आज की शाम मैं तन्हा हूँ
आओ, आज मुझे वो नज़्म दे जाओ।
आओ, आज मुझे वो नज़्म दे जाओ।।

कल्पना का आधार

मेरी कल्पनाओं का संसार
शब्दों और भावों का मानों
सुंदर गठबंधन हो,
अदृश्य से दृष्टव्य तक
हर ओर मुझे मिल जाते हैं शब्द
भर देती हूँ उनमें भाव,
पर जाने क्यों
हर कल्पना में, भावना में
यकायक, न जाने कैसे तुम
मेरे समक्ष खड़े हो जाते हो
घुल जाते हो शब्दों में
मिल जाते हो भावों में,
बुनती हूँ कुछ और
संवरता है कुछ और,
अचानक मिले उस मिश्रण को
चख लेती हूँ
खो जाती हूँ उसके स्वाद में,
मान गयी हूँ
ये यूँ ही अनायास नहीं होता
शायद मेरी स्मृतियों में
मन के कोने-कोने में
तुम्हारा ही अक्स घूमता है
तभी शायद मेरी कल्पना का
आधार तुम ही हो
सबसे सुंदर संसार तुम ही हो,
हाँ, शायद तुम ही हो।

सिलवटें

स्मृतियों के घेरे में
कभी निर्वेद, कभी मधुर
कभी विस्मित, कभी करुण
मस्तक पर आई
तुम्हारी याद की हर शिकन
और चेहरे पर मिलेजुले
भावों के संकुचन
के बीच झूलती मैं,
एकटक देखती और ढूँढती
चादर के उन बलों को,
परत-दर-परत उन तहों को
जो तुम्हारे होने का
एहसास दिलाती,
मेरे मन के हर पहलू में
करवटें बदलते तुम,
तभी तो घर की
पुरानी पड़ी दीवार से
उखड़ती हुई परतों में
तुम्हारी सिलवटें नज़र आतीं
और यही परतें मुझे
बिस्तर की उन सिलवटों की
याद दिलातीं
जो तुम बिन वीरान पड़ी हैं
पर आज भी
तुम्हारे एहसास को
सजीव रखती हैं।

तन्हाइयों का सफ़र

सुकूं देता है ये
तन्हाइयों का सफ़र
दूर होकर भी
क़रीब हो जाते हो
मेरे दिल से
मेरी रूह में उतर जाते हो,
याद आ जाते हैं
वो इश्क़ के नग़मे
बेइंतिहा मुहब्बत के लम्हे
जी लेती हूँ उनमें डूबकर
भूल जाती हूँ
जुदाई के पल
मुड़कर देखती हूँ
नज़र आता है तुम्हारा अक्स,
तुमको अपने क़रीब पा
गुम हो जाती हूँ
सफ़र में ख़ुद को तन्हा नहीं
तुमको अपने क़रीब ही पाती हूँ।

आज थामा है तुमने हाथ मेरा

बदल गयीं हाथ की लकीरें मेरी
मिला जो स्पर्श उंगलियों का तेरी,
बंद पलकों में ख़्वाब यूँ सजने लगे
तस्वीर से दिल में बसने लगे,
एक अरसे से था इंतज़ार तेरा, आज थामा है तुमने हाथ मेरा।

बढ़ गयी आज धड़कन मेरी
ठहरे जल में बून्दें मचलने लगीं,
दिल में तेरे उतरती गयी
महसूस श्वासों को करती गयी,
उपवन में भी बहार आ गयी
मुरझाए से पुष्पों में ज्यों जान आ गयी,
दौड़ गया लहू शिराओं में मेरा, आज थामा है तुमने हाथ मेरा।

नभ में भी आज कैसे हैं बादल घिरे
भींग रहे हम प्यार की बौछार में खड़े,
चाँद सूरज देख हमें शरमा रहे
बादलों की ओट में छुपकर प्रीत सिखला रहे,
न कर सकती बयां एहसास तेरा, आज थामा है तुमने हाथ मेरा।

हुआ ऐसा असर लफ्ज़ ही सिल ही गए
डाल हाथों में हाथ देखते रह गए,
कोमल मन में कलियाँ ऐसे खिलीं
रुत मानों प्रेम की ज्यों चल पड़ी,
मिल गया आज मुझको जहां सारा तेरा, आज थामा है तुमने हाथ मेरा।

मेरा भारत

मेरा भारत
वेदों से प्रकाशित
श्रेष्ठ कलाओं से सुशोभित
वीणा के तारों से झंकृत सदा सुशोभित हो।

मेरा भारत
विश्वबन्धुत्व की भावना वाला
वन्दनीय चरित्रों से पावन
धर्म, अर्थ, ज्ञान, कर्म से युक्त सदा सुशोभित हो।

मेरा भारत
सरिताओं से लहराता हुआ
पर्वत श्रंखलाओं से उज्ज्वल
भक्ति भावना से युक्त सदा सुशोभित हो।

मेरा भारत
संस्कार, संस्कृतियाँ, पर्व, उल्लास
ही जिसकी पहचान है,
जहाँ विभिन्नता में एकता है सदा सुशोभित हो।

मेरा भारत
तिरंगे से शोभित है
त्याग, बलिदान, शांति, हरियाली,
सुख, समृद्धि का प्रतीक है सदा सुशोभित हो।

कुछ कर्म ऐसे कर जायेंगे

माँ सी ममता, प्रभु सी दया
सब पर प्रेम लुटायेंगे
चमकेंगे हम धरा गगन पर
कुछ कर्म ऐसे कर जायेंगे।

सीखेंगे हम दीप से जलना
चहुँ ओर प्रकाश फैलायेंगे
करेंगे प्रेम पथ आलोकित
कुछ कर्म ऐसे कर जायेंगे।

हर लेंगे मन से तम को
आशा विश्वास जगायेंगे
लक्ष्य न हो आँखों से ओझल
कुछ कर्म ऐसे कर जायेंगे।

आँधी तूफानों में भी
हम कभी नहीं घबराएंगे
अडिग रहें, अविचल रहें
कुछ कर्म ऐसे कर जायेंगे।

धोखा, झूठ, फ़रेब कर दूर
सत्य की बाती जलायेंगे
जीवन की हम बनें प्रेरणा
कुछ कर्म ऐसे कर जायेंगे।

कहीं खुरदुरा तो कहीं मखमली सा

हार गई हूँ शब्दों से
जारी है एहसासों से जद्दोजहद
तन्हा रात में
मानों चाँद की तलाश है
कहीं खुरदुरा
तो कहीं मखमली सा एहसास है।

शेष हैं खंडहर
आलिशान जज़्बातों के
रेज़ा-रेज़ा बिखरे हैं
दिल की ज़मीं पर
खोज रहे धमनियाँ
मानों धड़कन की आस है
कहीं खुरदुरा
तो कहीं मखमली सा एहसास है।

एहसासों की कश्ती
पर सवार
हर्फ़-हर्फ़ बंट गए हैं शब्द
ढूंढ रहे किनारा
ज्यों फंस गए मंझधार में
मानों मंज़िल की तलाश है
कहीं खुरदुरा
तो कहीं मखमली सा एहसास है।

तेरे साथ की चाह अभी बाक़ी है

न रहीं अब उमंगें, न रहीं अब तरंगें
तन हुआ गठरी सा
पर तेरे साथ की चाह अभी बाक़ी है.....

उम्र का ढलता पड़ाव है, कठिन बनी हर राह है
न है जीने की तमन्ना पर
तेरे साथ की चाह अभी बाक़ी है.....

निभाया है उम्र भर ये रिश्ता, सीखा एक-दूजे से हमने जीना
छोड़ न जाना बीच मंझधार क्योंकि,
तेरे साथ की चाह अभी बाक़ी है,..

बिन सांचे के तुझमें ढलती गयी मैं, आँख मूँद तेरे पीछे चलती गयी मैं
ऐसे ही हाथ थाम सदा साथ चलेंगे क्योंकि,
तेरे साथ की चाह अभी बाक़ी है.....

मत करो तुम जाने की बात, समझो मेरे मन की आस
रुको पल-दो-पल, संग ले लो मुझे भी क्योंकि,
तेरे साथ की चाह अभी बाक़ी है..!

तुम बनो मेरी लाठी, मैं बनूँ तुम्हारी साथी
आओ जी लें फिर वही पल
क्योंकि, तेरे साथ की चाह अभी बाक़ी है...!

गुज़ार दी उम्र रिश्ते निभाने में, न सोचा कभी अपने बारे में
ग़र नहीं हैं सदायें रुख़ में हमारे, फिर भी
तुझ संग जीने की चाह अभी बाक़ी है.....!

मेरे साथी! आओ खिला दें फिर नई भोर
संग चल पड़ें अब मंज़िल की ओर
मत भूलो, चंद सांसें अभी बाक़ी हैं
और तेरे साथ की चाह भी अभी बाक़ी है...।

मैं हूँ साठ के पार

हाँ, मैं हूँ साठ के पार
सेवानिवृत्त हूँ, फिर भी उम्रदराज़ नहीं,
जीती हूँ अब भी उम्र के उस दौर में....

जब फुदकता था दिल सोलह की उम्र में,
मचलते थे अरमान पच्चीसवें वय में,
संभालती थी गृहस्थी पैंतीस की उम्र में,
निभाती थी जिम्मेदारियाँ
ज्यों पैंतालीसवें साल में,
हरकतें तब भी थीं वही बचपन वाली
सिर्फ कहने को थी उम्र पचपन वाली।

अब हूँ साठ के पार
ठहराव है,
पर अब भी उसी बहाव में हूँ,
खुलकर जीवन जीती हूँ
अब भी ठहाके लगाती हूँ
हरी घास पर नंगे पैर दौड़ जाती हूँ
ठेले से बर्फ़ का गोला बनवाती हूँ,
अब भी जीतती हूँ
कैरम में सेवक संग रानी
अब भी बोल उठता है आईना देख मेरी जवानी।

ये और बात है
अब रंगों का प्रयोग
कैनवास पर नहीं, केशों पर आजमाती हूँ,
वर्षों से संजोयी महज़ अनुभूतियाँ
ये झुर्रियाँ दिखा
बहुत फायदे उठाती हूँ,
फिर भी कहे देती हूँ यारों !
मत समझना मुझको बूढ़ी
ज़िन्दगी तो अब शुरू हुई है
स्वीट सिक्सटीन में
सैंतालीस वर्ष के अनुभव के साथ
बिंदास जीती हूँ, नाचती गाती हूँ,
परवाह नहीं, उम्र कोई भी हो यार
खुलकर कहती हूँ
हाँ, मैं हूँ साठ के पार।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

जीवन का पथ जितना सुखद होता है उतना ही विकट भी और उस विकट मार्ग पर चलते हुए हमारा मार्ग अपने आप प्रशस्त हो जाता है। जीवन के ये २१ दिन जितने विकट थे उतने ही सहज भी क्योंकि हम घर में रहकर खुद को सुरक्षित कर पा रहे हैं तो जो बाहर हैं, देश सेवा में लगे हैं उनके लिए एक चिंता भी बनी हुई है। इसी चिंता को, डर को दूर करने के लिए और मन के भटकाव को दूर करने के लिए कुछ रचनाएँ लिखी गईं जिनको आप सबके साथ साझा कर रही हूँ।

आज संतुष्ट हूँ कि मैं खुद के लिए समय निकाल पाई हूँ और अपने बोझिल एवं परेशान मन से नकारात्मकता हटाकर उसे सकारात्मक राह दिखा पाई हूँ। आज गर्वित हूँ कि मैं अपनी खामोश जुबां से, परेशान मन से जंग जीत गयी हूँ जिसने मुझे मौन कर दिया था और अब सबसे अपनी बात कहने के लिए मेरे पास शब्द हैं। अपने सभी देशवासियों के लिए प्रार्थना करती हूँ कि वो सदा स्वस्थ रहें, सुरक्षित रहें, सकारात्मक रहें।

धन्यवाद!

रचनाकार

डॉ. नीरजा मेहता 'कमलिनी'

Email- mehta.neerja24@gmail.com

Mobile - 9654258770

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति

www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331

संपर्क- 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-143-5

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com

Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/

Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/